Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

# समकालीन उपन्यासों में चित्रित कामकाजी महिलाएं

**सुमन साहू**
शोधार्थी, शास. दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई, दुर्ग, छतीसगढ़

**शोध सार**

समकालीन दौर में स्त्री के कामकाजी जीवन में आने वाले अनेक चुनौतियों का चित्रण हिंदी जगत के समकालीन उपन्यासकारों के उपन्यासों में देखा जा सकता है। समकालीन उपन्यासकारों में मुख्यतः मन्नू भंडारी, ममता कालिया, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती आदि कामकाजी स्त्री के जीवन दशा को बहुत बारीकी से समझ पाई है। उनके उपन्यासों को पढ़कर हम नौकरी पेशा में कार्यरत स्त्री की स्थिति को बेहतर ढंग से समझ सकते है। यह लेखिकाएं आधुनिक महिलाओं के विचारों में आने वाले परिवर्तनों को रचना का आधार बनाती है। उनकी स्त्रियां भौतिक जगत की मार सहते हुए, आर्थिक संकटों से गुजरती नजर आती है। इनके उपन्यासों की महिलाएं कामकाजी जीवन में अनेक शारीरिक व मानसिक पीड़ा सहती हुई दिखती है। दफ्तरी जीवन में महिलाओं को परपुरुषों के हवस भरी नजरों का शिकार होना पड़ता है। कई बार यह पुरुष महिलाओं पर बलात् करने की कोशिश भी करते है । महिलाओं के साथ कार्यस्थलों पर ऐसी घटनाएं होती ही रहती है किंतु वह अपनी सूझ-बूझ व विवेक से अपनी सुरक्षा स्वयं ही करती है। समकालीन उपन्यासों में चित्रित स्त्रियां पराधीनता को अस्वीकारते हुए अपने बलबूते पर आगे बढ़ने का हौसला रखती है। वह अपने जीवन की बागडोर अपने हाथों में रखती है। स्वयं बाहरी जीवन से संघर्ष कर समाज में अपनी स्थिति मजबूत करती है। आज महिलाएं भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए पुरुष पर आश्रित नहीं रहती, बल्कि वह मेहनत कर अपनी इच्छा पूर्ति खुद करती है। कामकाजी जीवन में प्रवेश कर महिलाओं ने साबित कर दिया, कि वह अपने जीवन की स्वामिनी स्वयं है। उसे भी स्वतंत्र निर्णय लेने का तथा स्वतंत्र जीवन जीने का पूरा हक है।

**मुख्य शब्दः**- समकालीन, कामकाजी, संघर्ष, आत्मनिर्भर, कार्यस्थल, घर-परिवार, साहसी।

## मूल आलेख

समकालीन उपन्यासों में आधुनिक महिलाओं के कामकाजी जीवन की दशा देखी जा सकती है। हमारे भारतीय समाज की परंपराएं समय अनुसार निरंतर बदलती रही है। पुरातन समय में महिला केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित रही। गृहस्थ का दायित्व केवल महिला के ऊपर लाद दिया जाता था, किंतु आधुनिक समाज में महिला एवं पुरुष दोनों ही गृहस्थ का दायित्व समान रूप से निभा रहे हैं। आज महिला घर से बाहर निकलकर कामकाजी जीवन में प्रवेश कर रही है। "कार्यरत् महिलाएं शब्द उन स्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो वेतन वाले काम धंधा में लगी हैं।"[1] कामकाजी जीवन में महिलाओं को अनेक विपरीत परिस्थितियों तथा समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वह इस जीवन में तमाम संघर्षों को चुनौती देते हुए बेहतर जीवन की ओर अग्रसर दिखाई देती हैं। आज महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर स्वतंत्र जीवन जी रही हैं। वह अपने जीवन के निर्णय खुद ही ले रही हैं। वह अब पितृसत्तात्मक दबाव से मुक्त होकर

आजाद जीवन की ओर कदम बढ़ा चुकी हैं। आधुनिक स्त्रियां अपनी अस्मिता को लेकर सचेत व जागरूक हैं। इस संबंध में पूनम ने लिखा है- "आधुनिक संदर्भ में स्त्री चेतना के आरंभ की पहचान नवजागरण के उस अंकुर से की जा सकती हैं जिसमें पराधीनता का बोध और उससे मुक्ति की अदम्य कामना प्रस्फुटित हो रही थी।"[2]

समकालीन उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं की जीवन दशा का चित्रण इस प्रकार है:-

**1. ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित कामकाजी महिला -**

ममता कालिया ने उपन्यासों में वर्तमान जीवन के विसंगतियों से गुजरती कामकाजी नारी की दशा का वर्णन किया है। ममता कालिया के उपन्यासों की नायिकाएं कामकाजी जीवन से संबंध रखती हैं। इसके उपन्यासों की महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं। ममता के उपन्यास 'अंधेरे का ताला' की नंदिता आधुनिक विचारों वाली सुशिक्षित महिला है। नंदिता कॉलेज में प्रधानाध्यापिका है। प्रधानाध्यापिका के रूप में नंदिता को अपने कामकाजी जीवन में अनेक संघर्ष से होकर गुजरना पड़ता है। कभी कार्यस्थल में उस पर हमले किए जाते है, तो कभी उसकी हैसियत याद दिलाई जाती है। नंदिता ईमानदार व साहसिक महिला है। वह अपराधीकरण की समस्या को दूर करना चाहती है। इसके लिए वह अपने स्तर पर लड़ाई भी लड़ती है। नंदिता शिक्षा पद्धति में सुधार लाने का प्रयास करती है। वह छात्रों को नैतिक आचरण के लिए प्रेरित करती है। इस तरह नंदिता अनेक मुसीबतों के बाद भी हार नहीं मानती और जीवन को सुचारू रूप से जीने लगती है।

कालिया के 'लड़कियां' उपन्यास में भी हम कामकाजी महिला के भिन्न स्वरूप को देख सकते है। लड़कियां उपन्यास की मुख्य स्त्री पात्र लल्ली और आफशाँ मुंबई जैसे महानगर में अपने सपने पूरे करने आई है, किंतु कदम-कदम पर उन्हें अकेलेपन व असुरक्षा का मुकाबला करना पड़ता है। आफशाँ मॉडल बनने के लिए पाकिस्तान से भारत आई है। वहीं लल्ली विज्ञापन कंपनी में नौकरी करती है। दोनों ही स्त्रियां अविवाहित है। यही वजह है कि कार्यस्थल में कार्यरत कर्मचारी इन्हें अकेली जानकर इन पर कुदृष्टि डालते है। इस प्रकार लड़कियां उपन्यास में कामकाजी अविवाहित महिलाओं के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

ममता कालिया के 'नरक दर नरक' की उषा भी कामकाजी महिला है। वह प्रेमविवाह करती है, किंतु विवाह के बाद वह तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करती है। उषा का पति जगन आर्थिक तंगी के चलते अपने वैवाहिक जीवन में कटुता ला बैठता है। जगन अपनी बेरोजगारी का क्रोध कहीं ना कहीं उषा पर निकलता है। उषा जगन का प्रेम व साथ चाहती है, किंतु जगन उषा को समझ नहीं पाता। उषा जगन से कहती है- "तुम सोचते हो मैं रूपये के लिए लड़ रही हूं? तुम मुझसे बोल कैसे रहे हो? ऐसे तो कोई नौकर तक से नहीं बोलता।"[3] उषा कामकाजी जीवन के अतिरिक्त पारिवारिक कलह का भी सामना करती है। जगन उषा से केवल आर्थिक संबंध रखता है इससे साफ जाहिर है कि जगन अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए उषा के साथ रहता है।

ममता कालिया के उपन्यास 'एक पत्नी के नोट्स' की कविता भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए पति संदीप के कैद में ही रह जाती है। कविता के कामकाजी जीवन की सफलता से संदीप जलन महसूस करता है। वह अपनी पत्नी की उन्नति को पचा नहीं पाता, इसलिए वह बिना किसी वजह के कविता पर तरह-तरह के आरोप लगाकर अपने अहम को संतुष्ट करता है। संदीप कविता से कहता है - "तुम मेरे जीवन के सबसे सुखद प्रसंग की सबसे दुखद परिणति हो।"[4] इस उपन्यास में देखा जा सकता है की पत्नी यदि पति से आगे बढ़ जाए, तो यह पति बर्दाश्त नहीं कर पाता उल्टा उस पर अनेक लांक्षण लगाने में जुट जाता है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों में स्त्री सामर्थ्य को बताया है साथ ही स्त्री के विडंबना भरे जीवन को भी पाठकों के समक्ष रखा है।

**2. मन्नू भंडारी के उपन्यास में चित्रित कामकाजी महिला -**

मन्नू भंडारी ने बदलते समाज में नारी की स्वतंत्रता को लेकर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। उनके चर्चित उपन्यास 'आपका बंटी' की शकुन शिक्षित व कामकाजी महिला है। वह सामाजिक परंपराओं में घिरी न रहकर उन सामाजिक परंपराओं को लताड़ने वाली जागरूक महिला है। वह केवल एक पत्नी या मां नहीं है, बल्कि कॉलेज की प्रिंसिपल भी है अर्थात उसने समाज में स्वयं अपना मान सम्मान व जगह सुनिश्चित किया है। शकुन का पति अजय पारंपरिक सोच रखने वाला पुरुष है। पति अजय शकुन से एक आदर्श पत्नी की अपेक्षा रखता है, जो उसके इशारों पर चले, किंतु ऐसा न होने पर वह उससे दूरी बना लेता है। डॉ. सुभाष चंद्र गुप्ता कामकाजी महिलाओं के विषय में कहते है - "कार्यरत महिलाओं से पत्नियों के रूप में जिस आचरण और कर्तव्य पालन की जैसी आशा की जाती है, उसके कारण उनको ऐसे बोझ को वहन करना पड़ता है, जो उन महिलाओं के लिए आंतरिक संघर्ष, दुविधा एवं तनाव उत्पन्न कर देता है।"[5] पति द्वारा शकुन को ना समझे जाने पर, वह उससे तलाक लेकर अन्य पुरुष डॉक्टर जोशी से विवाह कर लेती है। शकुन अपने पारिवारिक जीवन की वजह से कामकाजी जीवन में बाधा नहीं आने देती। शकुन की आर्थिक स्वतंत्रता ही उसे स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में उजागर करती है। वह अन्य घरेलू महिला की तरह विपरीत परिस्थिति आने पर दुःख, संताप नहीं करती, बल्कि आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए जीवन में आगे बढ़ती है। वह अपने पति अजय से तलाक के विषय में कहती है- "एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था हो गया। दस वर्ष का यह विवाहित जीवन एक अंधेरी सुरंग में चलते-चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था।"[6] इससे स्पष्ट है कि शकुन अतीत का रोना न रोकर नए जीवन की शुरुवात करने में विश्वास रखती है।

मन्नू भंडारी के उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' की रंजना कामकाजी महिला है। वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण अपने विवाह का निर्णय स्वयं लेती है। रंजना अमर नामक युवक से अंतर्जातीय विवाह कर लेती है। रंजना और अमर के जीवन में जब अमला नामक युवती का प्रवेश होता है, तब दोनों के वैवाहिक संबंधों में दरार आ जाती है। रंजना को जब लगता है कि वह अपने पति अमर के जीवन में महत्व नहीं रखती, तब वह उसे छोड़कर चली जाती है। रंजना अकेले जीवन जीने का फैसला केवल अपनी आर्थिक आत्मनिर्भरता के बल पर ले पाती है। महिला जब कामकाजी जीवन में प्रवेश कर स्वतंत्र पहचान बनाती है,

तब वह पुरुषों पर अधीन रहना छोड़ देती है। यही कारण है कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है तथा पुरातन परंपराओं का त्याग कर रही है।

### 3. कृष्णा सोबती के उपन्यास में चित्रित कामकाजी महिला -

कृष्णा सोबती के चर्चित उपन्यास 'ऐ लड़की' की प्रमुख नायिका पात्र लड़की स्वाभिमानी एवं आत्मनिर्भर है। वह घर से बाहर निकलकर अर्थोपार्जन के लिए नौकरी करती है। लड़की अपने भाइयों के शरण में रहकर कुंठाग्रस्त एवं कैद जीवन नहीं जीना चाहती। इसलिए वह तय करती है कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर अपने जीवन की स्वामिनी खुद बनेगी। लड़की अपने परिवारजनों से कोई उम्मीद नहीं रखती। लड़की इस विषय में कहती है- "मैं किसी को नहीं पुकारती। जो मुझे आवाज देगा, मैं उसे जवाब दूंगी।"[7] वह स्वयं अपनी बीमार मां की सेवा करती है। उनके दवाइयां का खर्च वहन करती है। मां द्वारा खरी-खोटी सुना दिए जाने पर भी लड़की क्रोधित नहीं होती। लड़की समझदार है। वह कामकाजी और घरेलू दोनों ही जीवन के दायित्वों को बखूबी निभाते दिखती है। सोबती ने लड़की के द्वारा समस्त स्त्रियों में सचेतना लाने की पहल की है, ताकि हर स्त्री अपनी स्वतंत्रता को समझ पाए और गुलामी भरे जीवन से स्वयं को आजाद कर पाए।

### 4. उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में चित्रित कामकाजी महिला -

उषा प्रियवंदा के उपन्यासों को पढ़कर ऐसा जाना पड़ता है कि उन्होंने नारी जीवन की समस्याओं को बहुत नजदीक से देखा है। उषा प्रियवंदा के उपन्यासों की स्त्रियां निर्भीक और स्वालंबी है। उषा प्रियवंदा के उपन्यासों की स्त्रियों के बारे में लिखा गया है- "स्वालंबन, आत्मगौरव, सम्मान और स्वतंत्रयभाव के बल पर निखरकर, वह नये जीवन यथार्थ में नये विश्वास से प्रतिष्ठित हो चुकी है।"[8] उषा प्रियवंदा के उपन्यास 'पचपन खंबे' लाल दीवारे' की सुषमा मध्यवर्गीय कामकाजी स्त्री है। सुषमा दिल्ली के कॉलेज में वार्डन एवं लेक्चर है। सुषमा पिता के अस्वस्थ होने पर स्वयं घर की जिम्मेदारी उठाती है ।वह अपने छोटे भाई- बहनों को हर सुख-सुविधा देना चाहती है। सुषमा एक अविवाहित स्त्री है। वह घर की इकलौती नौकरी करने वाली लड़की है, जिसकी वजह से उसके माता-पिता चाहते ही नहीं है कि उसकी शादी हो। परिवार में सुषमा अर्थप्राप्ति का केवल साधन बन कर रह गई है। यह सब जानते हुए भी सुषमा ने परिवार के प्रति हीन भाव नहीं रखा। सुषमा एक अध्यापिका के तौर पर भी आदर्श छवि लिए हुए है। वह ईमानदार व न्यायप्रिय महिला है। छात्रों के साथ उसका व्यवहार स्नेहपूर्ण है। कामकाजी जीवन में भी विपत्तियां सुषमा का पीछा नहीं छोड़ती। कॉलेज के अन्य सह-अध्यापिकाओं द्वारा सुषमा के खिलाफ षड्यंत्र रचा जाता है। उसे पर उल्टे-सीधे इल्जाम लगाकर उसका वार्डनशीप का पद छीनने की साजिश की जाती है। प्रिंसिपल द्वारा सुषमा को इस्तीफा देने को कहा जाता है, जिससे वह बेहद दुखी होती है। सुषमा को प्राइवेट कॉलेज में नौकरी पाने के लिए उसे नारीत्व की कीमत चुकाने को कहा जाता है, किंतु सुषमा अपने स्वाभिमान को ऊपर रखते हुए नौकरी का त्याग कर देती है। सुषमा नील से प्रेम करती है, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वह उसे

स्वीकार नहीं पाती। वह नील से कहती है- "मेरी बहुत जिम्मेदारियां है। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू ,दो बहने और भाई सब मुझे करना है।"[9]

उषा प्रियवंदा के चर्चित उपन्यास 'शेषयात्रा' की अनु सुशिक्षित स्त्री है। उसका विवाह प्रणय से तय कर दिया जाता है। वह भारत को छोड़कर विदेश की चकाचौंध वाली दुनिया में जा बसती है, किंतु वह अपनी भारतीय संस्कृति को नहीं भूलती। अनु पर प्रणव का कड़ा पहरा रहता है। वह अनु की हर गतिविधि को नियंत्रित करना चाहता है। उसके उठने-बैठने, पोशाक से लेकर व्यवहार और विचार हर चीज में बंदिशे लगता है। प्रणय अनु से विश्वासघात कर उसे छोड़ देता है। उसे लगता है कि अनु उसके बिना जी नहीं पाएगी, लेकिन अनु का संघर्ष जारी रहता है। वह अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी कर डॉक्टर बन जाती है और स्वतंत्र जीवन जीने लगती है। अनु अपने वैवाहिक जीवन के कटु यादों को लेकर नहीं रोती, बल्कि मेहनत व लगन से डॉक्टर बनकर अपने स्वतंत्र जीवन का राह स्वयं चुनती है। अनु डॉक्टर बनकर प्रणव के अहम को चूर कर देती है। प्रणव अनु को आश्चर्य भरे नजरों से देखता है और सोचता है - "जिस पगली, बौराई लड़की को छोड़ गया था क्या यह वही है?[10] अनु चेतनशील व जागरूक है, जो जीवन के हर उतार-चढ़ाव को पार कर सफल होकर दिखाती है। तलाकशुदा होते हुए भी अनु किसी से आर्थिक मदद के लिए गिड़गिड़ाती नहीं है, बल्कि स्वयं आर्थिक आत्मनिर्भर होकर समाज के प्रत्येक तलाकशुदा औरतों के लिए आदर्श बन जाती है।

**निष्कर्ष -**

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि महिलाएं आर्थिक संपन्नता हासिल कर परिवार व समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बना रही है। वह गृहस्थ के सीमित दायरे को छोड़कर अपना अस्तित्व तलाशने में लग गई हैं। आधुनिक महिलाएं बेचारी बनकर या पुरुष पर निर्भर होकर जीवन जीना पसंद नहीं करती। वह यह बखूबी समझ चुकी है कि उसके अंदर भी प्रतिभा व क्षमता है। अब वह स्वयं के दम पर जीवन जीने का अपार साहस रखती हैं। आधुनिक युग में प्रत्येक वर्ग की महिला नौकरी-पेशा को महत्व देती हैं, ताकि उसकी पहचान किसी अन्य व्यक्ति से जोड़कर न कराई जाए। एक महिला घर-परिवार से चाहे कितनी भी संपन्न क्यूं न हो, सारी भौतिक सुख-सुविधा उसके पास क्यूं न हो, इसके बावजूद वह काम करने बाहर निकलती है। आज की आधुनिक महिला सचेत है। वह यह भली-भांति जानती है कि पितृसत्तात्मक घेरे को यदि तोड़ना है, तो उसे स्वयं आत्मनिर्भर बनना ही पड़ेगा, वरना पुरुष की जीवन भर गुलामी सहनी पड़ेगी।

**संदर्भ -**

1. गुप्ता, डॉ. सुभाष चंद्र. कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज. नई दिल्ली: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण, 2009, पृष्ठ.-3
2. कुमारी, पूनम. स्त्री चेतना और मीरा के काव्य. नई दिल्ली: अनामिका पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर, संस्करण, 2009, पृष्ठ.-38
3. कालिया, ममता. नरक दर नरक. हिंदी पॉकेट बुक्स, संस्करण, 1984, पृष्ठ.-87
4. कालिया, ममता. एक पत्नी के नोट्स. नई दिल्ली: किताब घर प्रकाशन, संस्करण, 2020, पृष्ठ.-17

5. भंडारी, मन्नू. संपूर्ण उपन्यास. नई दिल्ली: राधा कृष्ण प्रकाशन, 2009, पृष्ठ.- 280
6. गुप्ता, डॉ. सुभाषचंद्र. कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज. नई दिल्ली: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण, 2009, पृष्ठ.-154
7. सोबती, कृष्णा. ए लड़की. नई दिल्ली: राजकमल पेपरबैक्स, तीसरा संस्करण, 2015, पृष्ठ.-49
8. तिवारी, डॉ. रामचंद्र. हिंदी का गद्य-साहित्य. वाराणसी: नवम संस्करण, 2014, पृष्ठ.-264
9. प्रियवंदा, उषा. पचपन खंबे लाल दीवारें. राजकमल प्रकाशन, संस्करण, 2013, पृष्ठ.- 104
10. प्रियवंदा, उषा. शेषयात्रा. राजकमल प्रकाशन,संस्करण, 1984, पृष्ठ.-104